सोच अच्छी होनी चाहिए क्योंकि नजर का इलाज है नजरिए का नहीं।
– अज्ञात

'टाइम' की दुनिया

बॉलिवुड स्टार आयुष्मान खुराना समेत तीन और लोग इस सूची में हैं जिन पर भारतीय गर्व कर सकते हैं। लेकिन जिस एक नाम ने दुनिया भर के लोगों को चौंकाया वह है बिल्कीस। 82 वर्षीया बिल्कीस उन बुजुर्ग महिलाओं में हैं जिन्हें 'शाहीन बाग की दादियों' के रूप में देश ने देखा।

रवि वर्मा।

ग्लोबल धमक वाली अमेरिकी पत्रिका 'टाइम' की दुनिया के 100 सबसे प्रभावशाली लोगों की सालाना सूची ने इस बार बहुतों को चौंकाया। साल 2020 की इस सूची में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को फिर से जगह मिली है और 2014 में सत्ता में आने के बाद से यह चौथा मौका है जब उन्हें इसमें शामिल किया गया। उनके अलावा बॉलिवुड स्टार आयुष्मान खुराना समेत तीन और लोग इस सूची में हैं जिन पर भारतीय गर्व कर सकते हैं। लेकिन जिस एक नाम ने दुनिया भर के लोगों को चौंकाया वह है बिल्कीस।

82 वर्षीया बिल्कीस उन बुजुर्ग महिलाओं में हैं जिन्हें 'शाहीन बाग की दादियों' के रूप में टीवी चैनलों पर पूरे देश ने देखा और पहचाना है। बिल्कीस सीएए के खिलाफ शुरू हुए शाहीन बाग के शांतिपूर्ण आंदोलन में न केवल पहले दिन से शामिल रहीं, बल्कि इसके स्वरूप को शांतिपूर्ण और सर्वसमावेशी बनाए रखने में भी उनका सक्रिय योगदान रहा। सौम्य मुस्कान, समझदारी भरी तर्कपूर्ण बातें, सबके लिए प्यार और आशीर्वाद का संदेश– ये ऐसे तत्व थे जो उस दौरान शाहीनबाग आने और उनसे मिलने वाले हर शख्स को प्रभावित करते रहे। उन जैसे लोगों का ही प्रभाव था कि चर्चित हो रहे शाहीन बाग आंदोलन पर कब्जा जमाने के कट्टरपंथी और राजनीतिक प्रयासों को नाकाम करते हुए उनसे साफ कह दिया गया कि 'यहां न तो किसी खास राजनीतिक दल की बात होगी और न किसी खास ध र्म की।' यही वजह है कि जब दिल्ली के एकदम अलग हिस्से में दंगे भड़के और उन दंगों की साजिश के आरोप में पुलिस ने हाल में उन लोगों पर भी शिकंजा कसा जो शाहीन बाग के आंदोलन में शामिल थे तो इसे आश्चर्य की बात माना गया।

बहरहाल, उन आरोपों की सचाई न्यायिक प्रक्रिया के जरिये सामने आएगी। अभी तो एक लोकतांत्रिक देश के रूप में हम इस बात पर गर्व कर सकते हैं कि सामान्य घरों की महिलाओं, बच्चों, बुजुर्गों की ओर से संवैधानिक मूल्यों की रक्षा के लिए ऐसा एक शांतिपूर्ण आंदोलन चला जिसकी गूंज दुनिया भर में सुनी गई। उससे उभरे एक प्रतिनिधि चेहरे का विश्व के सौ सबसे प्रभावशाली लोगों की सूची में शामिल होना इस बात की पुष्टि करता है। प्रसंगवश, इस सूची में भारतीय मूल का एक नाम डॉ. रवींद्र गुप्ता का भी है जिनके प्रयासों की बदौलत एडम कैस्टिलिजो एचआईवी को परास्त करने वाला दुनिया का दूसरा इंसान बन सके। करीब दस साल पहले टिमोथी ब्राउन का भी सफल इलाज हुआ था, लेकिन अब दूसरी कामयाबी के बाद एचआईवी मामलों में बोनमैरो ट्रांसप्लांट के जरिए इलाज की विधि को भरोसेमंद माना जा सकेगा। खास बात यह कि टाइम मैगजीन के लिए डॉ. रवींद्र गुप्ता पर टिप्पणी उनके मरीज एडम कैस्टिलिजो ने ही लिखी है।

पवित्र है गंगा

धर्म-दर्शन

अशोक वोहरा।

फिर भी क्यों पवित्र है गंगा का जल? कहते हैं कि इसका वैज्ञानिक आधार सिद्ध हुए वर्षों बीत गए। कुछ लोगों के अनुसार नदी के जल में मौजूद बैक्टीरियोफेज नामक जीवाणु गंगाजल में मौजूद हानिकारक सूक्ष्म जीवों को जीवित नहीं रहने देते अर्थात ये ऐसे जीवाणु हैं, जो गंदगी और बीमारी फैलाने वाले जीवाणुओं को नष्ट कर देते हैं। इसके कारण ही गंगा का जल नहीं सड़ता है। मतलब यह कि वैसे जीवाणु इसमें जिंदा नहीं रह पाते हैं तो जल को सड़ाते हैं। पूजा स्थान पर रखा यह जल कभी सड़ता नहीं है। इसे आप कभी भी खोलकर सूंघें आपको इसमें से बदबू नहीं आएगी। कई लोगों के यहां सालों से जल भरा हुआ रखा हुआ है। हालांकि इस पर अभी और शोध किए जाने की आवश्यकता है।

संपादकीय

फिर से मिला है मौका

पंजाब और हरियाणा जैसे राज्य तो पूरी तरह से कृषि संस्कृति से संचालित हैं। 2022 में पंजाब में चुनाव होना है, जहां कांग्रेस के सामने सबसे बड़ी चुनौती अपने किले को बचाने की होगी। हालांकि वहां किसान बिलों के विरोध में कांग्रेस के प्रमुख विपक्षी अकाली दल ने मोदी सरकार से इस्तीफा देकर खुद की शहादत सामने रखते हुए कांग्रेस के लिए चुनौती पेश की है। कांग्रेस की नजर किसान मुद्दों के जरिए हरियाणा में अपनी उस खोई हुई सत्ता व सियासी जमीन को पाने पर भी रहेगी, जिससे पिछले चुनावों में वह चूक गई थी। पिछले कुछ अरसे से अपने ही मसलों में घिरी कांग्रेस की पकड़ विपक्षी गठजोड़ पर कमजोर हुई है। किसान मुद्दों के बहाने कांग्रेस को मौका मिला है कि वह एक बार फिर विपक्ष का चेहरा और धुरी बन सके। दरअसल, विपक्ष के तमाम क्षेत्रीय दल मसलन बंगाल में टीएमसी, बिहार में आरजेडी, तमिलनाडु में डीएमके, महाराष्ट्र में एनसीपी आदि अपने–अपने स्तर पर किसानों की लड़ाई लड़ रहे हैं, लेकिन अगर राष्ट्रीय स्तर पर बात की जाए तो कांग्रेस आज भी विपक्ष की मुख्य आवाज नजर आती है। इसके अलावा, कांग्रेस के पास एक बढ़त यह भी है कि देश से जुड़े हर अहम मुद्दे को लेकर सबसे पहले आवाज वही उठाती है। फिर चाहे किसानों का मुद्दा हो, आर्थिक बदहाली हो, जीएसटी में राज्यों की हिस्सेदारी हो या फिर भारत–चीन सीमा पर तनाव का मामला, हर बार विरोध का सुर कांग्रेस के खेमे से ही उठता रहा है।

यूपी के भट्टा पारसौल का मामला हो या मध्य प्रदेश के मंदसौर में किसानों पर गोली चलने का, राहुल हर जगह किसानों के साथ खड़े होते दिखाई दिए।

पहले भी मिला है साथ

मंजरी चतुर्वेदी।।

किसान बिलों को लेकर जिस तरह से देश भर में एक नया किसान आंदोलन खड़ा होने की उम्मीद बन रही है, उसमें कांग्रेस अपने लिए भी बड़ा मौका देख रही है। कांग्रेस खुद को किसानों का सबसे बड़ा हितैषी दिखाकर जमीन पर अपनी पकड़ मजबूत करना चाहती है। उसकी कोशिश देश भर में वैसा ही माहौल तैयार करने की है, जैसा मोदी सरकार के आने के बाद आए लैंड बिल को लेकर बना था और मोदी सरकार को अपने पैर वापस खींचने पड़े थे। हालांकि कांग्रेस समझ रही है कि तब की स्थितियों और आज की स्थिति में खासा फर्क है। किसान बिल पर सरकार और बीजेपी जिस तरह आगे बढ़ रही है, उसमें उसके पीछे हटने की संभावना ना के ही बराबर ही दिखती है। फिर भी कांग्रेस इस पर आक्रामक ढंग से आगे बढ़ रही है तो इसके पीछे सबसे बड़ी वजह परसेप्शन की लड़ाई है।

कांग्रेस की कोशिश खुद को लड़ते हुए दिखाने की है। साथ ही इसके जरिए वह सरकार को घेरे भी रखना चाहती है। किसान हितों की आवाज बुलंद कर कांग्रेस जमीन पर किसानों, खेतिहर मजदूरों को यह साफ संकेत देना चाहती है कि आज भी उनकी सबसे बड़ी हितैषी वही है। लैंड बिल के समय पार्टी काफी हद तक

मोदी सरकार को किसान व गरीब विरोधी दिखाने में कामयाब रही थी। किसानों को लेकर पार्टी पहले भी उनके साथ खड़े होने की बात करती रही है। खासकर कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी शुरू से किसानों के बड़े पैरोकार के रूप में सामने आते रहे हैं। यूपी के भट्टा पारसौल का मामला हो या मध्य प्रदेश के मंदसौर में किसानों पर गोली चलने का, राहुल हर जगह किसानों के साथ खड़े होते दिखाई दिए। 2017 में यूपी चुनाव से पहले राहुल गांधी ने किसान यात्रा के नाम पर पूरा प्रदेश मथ डाला और इस दौरान वे किसानों से उनके कर्जों के फॉर्म इकट्ठा करते रहे। 2018 में मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ व राजस्थान में किसानों की कर्ज माफी की बात करके ही कांग्रेस सत्ता में पहुंची। आज भले ही देश की जीडीपी में खेती का योगदान पहले की तुलना में कम हुआ हो, लेकिन खेती–किसानी की अहमियत कम नहीं हुई है।

जाहिर सी बात है कि किसानों के मुद्दों को लेकर कांग्रेस के आंदोलन के पीछे अहम वजह कई राज्यों के आगामी चुनाव और सियासी मजबूरी ही है। जल्द ही मध्य प्रदेश में असेंबली के उपचुनाव होने हैं। इसके अलावा, आने वाले कुछ महीनों में बिहार के चुनाव होने हैं। इन राज्यों में कांग्रेस का काफी कुछ दांव पर लगा हुआ है। इन सभी जगहों पर कांग्रेस आने वाले चुनाव में मोदी सरकार के खिलाफ इस किसान विरोधी सेंटीमेंट का इस्तेमाल करेगी। रोचक है कि ये दोनों ही राज्य किसानों की दृष्टि से बेहद अहम हैं। इसके अलावा कांग्रेस की नजर यूपी, हरियाणा पंजाब पर भी है। यूपी में पिछले चुनावों में कांग्रेस भले ही चौथे स्थान पर रही हो, लेकिन जिस तरह से प्रियंका गांधी लगातार योगी सरकार को कटघरे में खड़ा कर रही हैं, उससे साफ है कि कांग्रेस वहां अपने दम पर मजबूत विकल्प बनने की कोशिश में है। खेती के लिहाज से यूपी भी अहम राज्य है।

कांग्रेस की कोशिश रहेगी कि किसानों के मुद्दे को लेकर वह तमाम विपक्षी दलों को उसी तरह से लामबंद करे, जैसे लैंड बिल के मुद्दे पर वह तमाम दलों को साथ लाने में कामयाब रही थी।

सूडोकु नवताल- 5487

मध्यम

		5			8			
	7			3	5			
3						6		
							8	5
	6						1	
4	2							
		1						8
			7	4			3	
			2			7		

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -5486 का हल

5	7	4	1	3	9	6	2	8
2	8	9	6	5	7	1	4	3
3	6	1	2	8	4	5	7	9
9	3	7	8	1	6	4	5	2
6	5	8	4	9	2	3	1	7
1	4	2	5	7	3	8	9	6
7	9	6	3	4	1	2	8	5
4	2	5	9	6	8	7	3	1
8	1	3	7	2	5	9	6	4

अपना ब्लॉग

रीढ़ मानी जाने वाली कृषि के खिलाफ

मोहन। अगर पार्टी जमीनी स्तर पर लोगों को यह समझाने में कामयाब होती है कि यह बिल किस तरह से देश की रीढ़ मानी जाने वाली कृषि के खिलाफ है तो इसका फायदा उसे होगा। माना जा रहा है कि इस लड़ाई के जरिए कुछ हद तक कांग्रेस को अपने संगठन की कमियों से भी निपटने में मदद मिलेगी। लंबे अरसे बाद कांग्रेस के हाथ एक ऐसा मुद्दा लगा है, जिस पर वह देश भर में अपने नेताओं और वर्कर्स को सड़क पर उतरने के लिए मोबिलाइज कर सकती है। किसी भी मुद्दे को लेकर जमीन पर उतरना हमेशा पार्टी वर्कर्स को एक नई ऊर्जा और हौसला देता है। आने वाले दिनों में राहुल गांधी को कांग्रेस की कमान संभालनी है। ऐसे में अगर कांग्रेस जमीनी स्तर पर सरकार के खिलाफ परसेप्शन बनाने में कामयाब रहती है तो राहुल गांधी की वापसी एक सफल नोट पर होगी, जहां वे यह दिखाने में कामयाब रहेंगे कि वे लगातार गरीबों, किसानों और मजदूरों की आवाज उठाते रहे हैं।